

Sunderkand Lyrics in Hindi

॥आसन ॥

कथा प्रारम्भ होत है। सुनहुँ वीर हनुमान ॥
राम लखन जानकी। करहुँ सदा कल्याण ॥

सुन्दरकाण्ड लिरिक्स इन हिंदी / संपूर्ण सुंदरकांड हिंदी में

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ रामचरितमानस ॥

॥ पञ्चम सोपान सुन्दरकाण्ड ॥

श्लोक -

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं,
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्,
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं,
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥1 ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥2 ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥3 ॥

जामवंत के बचन सुहाए | सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
तब लागि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई | सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
जब लागि आवौं सीतहि देखी | होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ॥
यह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा | चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा ॥

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर | कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुबीर सँभारी | तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता | चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना | एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत बिचारी | तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 1

हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥1 ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा | जानै कहूँ बल बुद्धि बिसेषा ॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता | पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा | सुनत बचन कह पवनकुमारा ॥

राम काजु करि फिरि मैं आवौं | सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥

तब तव बदन पैठिहउँ आई | सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
कबनेहुँ जतन देइ नहिं जाना | ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा | कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ | तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥

जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा | तासु दून कपि रूप देखावा ॥
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा | अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥
बदन पड़िठि पुनि बाहेर आवा | मागा बिदा ताहि सिरु नावा ॥
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा | बुधि बल मरमु तोर मै पावा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 2

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देह गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥2 ॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई | करि माया नभु के खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं | जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई | एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा | तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा | बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥

तहाँ जाइ देखी बन सोभा | गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाए | खग मृग बंद देखि मन भाए ॥
सैल बिसाल देखि एक आगें | ता पर धाइ चढेउ भय त्यागें ॥
उमा न कछु कपि कै अधिकाई | प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरि पर चढि लंका तेहिं देखी | कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥
अति उतंग जलनिधि चहु पासा | कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
छं0 - कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।

चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथिन्ह को गनै ॥
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥1 ॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥2 ॥
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानषु धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥3 ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 3

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥3 ॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लागि चोरा ॥
मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठि सो लंका । जोरि पानि कर बिनय संसका ॥
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा । चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेउं नयन राम कर दूता ॥

दोहा - 4

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥4 ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कौसलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
गरुड़ सुमेरु रेनू सम ताही । राम कृपा करि चितवा जाही ॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं । अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
सयन किए देखा कपि तेही । मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 5

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसिका बंद तहँ देखि हरषि कपिराइ ॥5 ॥

लंका निसिचर निकर निवासा । इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ॥
मन महुँ तरक करै कपि लागा । तेहीं समय बिभीषनु जागा ॥
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ॥
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी । साधु ते होइ न कारज हानी ॥
बिप्र रुप धरि बचन सुनाए । सुनत बिभीषण उठि तहँ आए ॥
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम्ह हरि दासन्ह महुँ कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

दोहा - 6

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥6 ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ॥

तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । करिहहि कृपा भानुकुल नाथा ॥
तामस तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
अब मोहि भा भरोस हनुमंता । बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता ॥
जौ रघुबीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ॥
सुनहु बिभीषण प्रभु कै रीती । करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 7

अस मैं अधम सखा सुनु मोह पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ॥7 ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्बाच्य विश्रामा ॥
पुनि सब कथा बिभीषण कही । जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही ॥
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहउँ जानकी माता ॥
जुगुति बिभीषण सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं बीति जात निसि जामा ॥
कृस तन सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics

दोहा - 8

निज पद नयन दिँ मन राम पद कमल लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥8 ॥

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ बिचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किँ बनावा ॥
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ॥
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । एक बार बिलोकु मम ओरा ॥
तून धरि ओट कहति बैदेही । सुमिरि अवधपति परम सनेही ॥
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ॥
अस मन समुझु कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ॥
सठ सूने हरि आनेहि मोहि । अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥

दोहा - 9

आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥9 ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥
नाहिं त सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥

स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥
चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति बिरह अनल संजातं ॥
सीतल निसित बहसि बर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥
सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई । सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ॥
मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ मै मारबि काढ़ि कृपाना ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 10

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहि धरहि रूप बहु मंद ॥10 ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥
सपनेँ बानर लंका जारी । जातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ बिभीषन पाई ॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई । तब प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
यह सपना में कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनकसुता के चरनन्हि परीं ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 11

जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीतेँ मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥11 ॥

त्रिजटा सन बोली कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ॥
तजौँ देह करु बेगि उपाई । दुसहु बिरहु अब नहिँ सहि जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सूल सम बानी ॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ॥
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी ॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलहि न पावक मिटिहि न सूला ॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अवनि न आवत एकउ तारा ॥
पावकमय ससि स्त्रवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना । देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

सो0 - 12

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारी तब ।
जनु असोक अंगार दीन्हि हरषि उठि कर गहेउ ॥12 ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥

चकित चितव मुदरी पहिचानी | हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ॥
जीति को सकइ अजय रघुराई | माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना | मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचंद्र गुन बरनै लागा | सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
लागीं सुनै श्रवन मन लाई | आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई | कहि सो प्रगट होति किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ | फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥
राम दूत मै मातु जानकी | सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मै आनी | दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसें | कहि कथा भइ संगति जैसें ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 13

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ॥
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥13 ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी | सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना | भयउ तात मों कहँ जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी | अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई | कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुख दायक | कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता | होइहहि निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचनु न आव नयन भरे बारी | अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता | बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता | तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जनि जननी मानहु जियँ ऊना | तुम्ह ते प्रेमु राम केँ दूना ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड लिरिक्स, Sunderkand Lyrics
दोहा - 14

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गद गद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥14 ॥

कहेउ राम बियोग तव सीता | मो कहँ सकल भए बिपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू | कालनिसा सम निसि ससि भानू ॥
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा | बारिद तपत तेल जनु बरिसा ॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा | उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई | काहि कहौ यह जान न कोई ॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा | जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं | जानु प्रीति रसु एतेनहि माहीं ॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही | मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता | सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई | सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 15

निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥15 ॥

जौ रघुबीर होति सुधि पाई । करते नहिं बिलंबु रघुराई ॥
रामबान रवि उएँ जानकी । तम बरूथ कहँ जातुधान की ॥
अबहिं मातु मै जाउँ लवाई । प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥
मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥
कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल बीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 16

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ॥16 ॥

मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नाएसि पद सीसा । बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहि नाही । जौ तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

दोहा - 17

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥17 ॥

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरें लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी । तेहिं असोक बाटिका उजारी ॥
खाएसि फल अरु बिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 18

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥18 ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना | पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
 मारसि जनि सुत बांधेसु ताही | देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥
 चला इंद्रजित अतुलित जोधा | बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
 कपि देखा दारुन भट आवा | कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
 अति बिसाल तरु एक उपारा | बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
 रहे महाभट ताके संगी | गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥
 तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा | भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
 मुठिका मारि चढा तरु जाई | ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया | जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

दोहा - 19

ब्रह्म अस्त्र तेहिँ साँधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
 जौ न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मितइ अपार ॥19 ॥

ब्रह्मबान कपि कहूँ तेहि मारा | परतिहुँ बार कटक संघारा ॥
 तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ | नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी | भव बंधन काटहिँ नर ग्यानी ॥
 तासु दूत कि बंध तरु आवा | प्रभु कारज लागि कपिहिँ बाँधावा ॥
 कपि बंधन सुनि निसिचर धाए | कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥
 दसमुख सभा दीखि कपि जाई | कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
 कर जोरें सुर दिसिप बिनीता | भुकुटि बिलोकत सकल सभीता ॥
 देखि प्रताप न कपि मन संका | जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
 दोहा - 20

कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।
 सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद ॥20 ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा | केहिँ के बल घालेहि बन खीसा ॥
 की धौँ श्रवन सुनेहि नहिँ मोही | देखउँ अति असंक सठ तोही ॥
 मारे निसिचर केहिँ अपराधा | कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ॥
 सुन रावन ब्रह्मांड निकाया | पाइ जासु बल बिरचित माया ॥
 जाकेँ बल बिरंचि हरि ईसा | पालत सृजत हरत दससीसा ।
 जा बल सीस धरत सहसानन | अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
 धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता | तुम्ह ते सठन्ह सिखावनु दाता ।
 हर कोदंड कठिन जेहि भंजा | तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
 खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली | बधे सकल अतुलित बलसाली ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
 दोहा - 21

जाके बल लवलेस तैं जितेहु चराचर झारि ।
 तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥21 ॥

जानउँ मैं तुम्हरि प्रभुताई | सहसबाहु सन परी लराई ॥

समर बालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ॥
 खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा । कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
 सब केँ देह परम प्रिय स्वामी । मारहिँ मोहिँ कुमारग गामी ॥
 जिन्ह मोहिँ मारा ते मै मारे । तेहिँ पर बाँधेउ तनयँ तुम्हारे ॥
 मोहिँ न कछु बाँधे कइ लाजा । कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥
 बिनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
 देखहु तुम्ह निज कुलहिँ बिचारी । भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी ॥
 जाकेँ डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
 तासों बयरु कबहुँ नहिँ कीजै । मोरे कहें जानकी दीजै ॥

दोहा - 22

प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि ।
 गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥22 ॥

राम चरन पंकज उर धरहू । लंका अचल राज तुम्ह करहू ॥
 रिषि पुलिस्त जसु बिमल मंयका । तेहिँ ससि महुँ जनि होहु कलंका ॥
 राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
 बसन हीन नहिँ सोह सुरारी । सब भूषण भूषित बर नारी ॥
 राम बिमुख संपति प्रभुताई । जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
 सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं । बरषि गए पुनि तबहिँ सुखाहीं ॥
 सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी । बिमुख राम त्राता नहिँ कोपी ॥
 संकर सहस बिष्नु अज तोही । सकहिँ न राखि राम कर द्रोही ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
 दोहा - 23

मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
 भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥23 ॥

जदपि कहि कपि अति हित बानी । भगति बिबेक बिरति नय सानी ॥
 बोला बिहसि महा अभिमानी । मिला हमहिँ कपि गुर बड़ ग्यानी ॥
 मृत्यु निकट आई खल तोही । लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
 उलटा होइहिँ कह हनुमाना । मतिभ्रम तोर प्रगट मै जाना ॥
 सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना । बेगि न हरहुँ मूढ़ कर प्राणा ॥
 सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ।
 नाइ सीस करि बिनय बहूता । नीति बिरोध न मारिअ दूता ॥
 आन दंड कछु करिअ गोसाँई । सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥
 सुनत बिहसि बोला दसकंधर । अंग भंग करि पठइअ बंदर ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
 दोहा - 24

कपि केँ ममता पूँछ पर सबहिँ कहउँ समझाइ ।
 तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥24 ॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि । तब सठ निज नाथहिँ लइ आइहि ॥
 जिन्ह केँ कीन्हसि बहुत बड़ाई । देखेउँमै तिन्ह केँ प्रभुताई ॥

बचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला । बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहैं आए पुरबासी । मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी । नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । भई सभीत निसाचर नारीं ॥

दोहा – 25

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जै कपि बढि लाग अकास ॥25 ॥

देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
तात मातु हा सुनिअ पुकारा । एहि अवसर को हमहि उबारा ॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई । बानर रूप धरें सुर कोई ॥
साधु अवगया कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा । जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा – 26

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता के आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥26 ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसैं रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेहु तात अस मोर प्रनामा । सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु । बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ॥
मास दिवस महुँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राणा । तुम्हह तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहूँ सोइ दिनु सो राती ॥

दोहा – 27

जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥27 ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्तवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
नाधि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा । कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि बारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥

तब मधुबन भीतर सब आए | अंगद संमत मधु फल खाए ॥
रखवारे जब बरजन लागे | मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 28

जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ॥28 ॥

जौ न होति सीता सुधि पाई | मधुबन के फल सकहिं कि खाई ॥
एहि बिधि मन बिचार कर राजा | आइ गए कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा | मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ॥
पूँछी कुसल कुसल पद देखी | राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ॥
नाथ काजु कीन्हैउ हनुमाना | राखे सकल कपिन्ह के प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ | कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ ॥
राम कपिन्ह जब आवत देखा | किँएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई | परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दोहा - 29

प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥29 ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया | जा पर नाथ करहु तुम्ह दाय ॥
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर | सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
सोइ बिजई बिनई गुन सागर | तासु सुजसु त्रेलोक उजागर ॥
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू | जन्म हमार सुफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी | सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥
पवनतनय के चरित सुहाए | जामवंत रघुपतिहि सुनाए ॥
सुनत कृपानिधि मन अति भाए | पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी | रहति करति रच्छा स्वप्रान की ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 30

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥30 ॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही | रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ जुगल लोचन भरि बारी | बचन कहे कछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना | दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी | केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
अवगुन एक मोर मै माना | बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा | निसरत प्रान करिहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा | स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥
नयन स्तवहि जलु निज हित लागी | जरै न पाव देह बिरहागी।
सीता के अति विपति बिसाला | बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 31

निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥31 ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥
बचन काँय मन मम गति जाही । सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई । जब तव सुमिरन भजन न होई ॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिबी जानकी ॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
सुनु सुत उरिन मैं नाहीं । देखेऊँ करि बिचार मन माहीं ॥
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

दोहा - 32

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥32 ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावन पालित लंका । केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला बचन बिगत अभिमाना ॥
साखामुग के बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥
नाधि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर गन बिधि बिपिन उजारा।
सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 33

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकुल।
तब प्रभावेँ बड़वानलहिं जारि सकइ खलु तूल ॥33 ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबुंदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलै कर करहु बनावा ॥
अब बिलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजे ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 34

कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥34 ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा | गरजहिं भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपि सेना | चितइ कृपा करि राजिव नैना ॥
राम कृपा बल पाइ कपिदा | भए पच्छजुत मनहुँ गिरिदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना | सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती | तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभु पयान जाना बैदेहीं | फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई | असगुन भयउ रावनहि सोई ॥
चला कटकु को बरनै पारा | गर्जहि बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी | चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं | डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

छं0 – चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥

कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥1 ॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ॥2 ॥

दोहा – 35

एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ॥35 ॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका | जब ते जारि गयउ कपि लंका ॥
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा | नहिं निसिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूत बल बरनि न जाई | तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥
दूतन्हि सन सुनि पुरजन बानी | मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसि जोरि कर पति पग लागी | बोली बचन नीति रस पागी ॥
कंत करष हरि सन परिहरहू | मोर कहा अति हित हियँ धरहु ॥
समुझत जासु दूत कइ करनी | स्तवहीं गर्भ रजनीचर धरनी ॥
तासु नारि निज सचिव बोलाई | पठवहु कंत जो चहहु भलाई ॥
तब कुल कमल बिपिन दुखदाई | सीता सीत निसा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें | हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा – 36

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लागि ग्रसत न तब लागि जतनु करहु तजि टेक ॥36 ॥

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी | बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥
सभय सुभाउ नारि कर साचा | मंगल महुँ भय मन अति काचा ॥

जौ आवइ मर्कट कटकाई | जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ॥
कंपहिं लोकप जाकी त्रासा | तासु नारि सभीत बड़ि हासा ॥
अस कहि बिहसि ताहि उर लाई | चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ॥
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता | भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ॥
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई | सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू | ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं | नर बानर केहि लेखे माहीं ॥

दोहा - 37

सचिव बैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥37 ॥

सोइ रावन कहूँ बनि सहाई | अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा | भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ॥
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन | बोला बचन पाइ अनुसासन ॥
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता | मति अनुरुप कहउँ हित ताता ॥
जो आपन चाहै कल्याना | सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ॥
सो परनारि लिलार गोसाई | तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥
चौदह भुवन एक पति होई | भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
गुन सागर नागर नर जोऊ | अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 38

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥38 ॥

तात राम नहिं नर भूपाला | भुवनेस्वर कालहु कर काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता | ब्यापक अजित अनादि अनंता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी | कृपासिंधु मानुष तनुधारी ॥
जन रंजन भंजन खल ब्राता | बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा | प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभु कहूँ बैदेही | भजहु राम बिनु हेतु सनेही ॥
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा | बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन | सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥

दोहा - 39

बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥39(क) ॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥39(ख) ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना | तासु बचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीति बिभूषन | सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ॥
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ | दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी | कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ॥

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥
तव उर कुमति बसी बिपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
कालराति निसिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 40

तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।
सीत देहु राम कहूँ अहित न होइ तुम्हार ॥40 ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही बिभीषन नीति बखानी ॥
सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मुत्यु अब आई ॥
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता मैं नाही ॥
मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥
अस कहि कीन्हैसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 41

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
मै रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ॥41 ॥

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं । आयूहीन भए सब तबहीं ॥
साधु अवग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदुल सेवक सुखदाता ॥
जे पद परसि तरी रिषिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट कुरंग संग धर धाए ॥
हर उर सर सरोज पद जेई । अहोभाग्य मै देखिहउँ तेई ॥

दोहा - 42

जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥42 ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ॥
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ॥
ताहि राखि कपीस पहिं आए । समाचार सब ताहि सुनाए ॥
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई । आवा मिलन दसानन भाई ॥
कह प्रभु सखा बूझिए काहा । कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
जानि न जाइ निसाचर माया । कामरूप केहि कारन आया ॥
भेद हमार लेन सठ आवा । राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी | मम पन सरनागत भयहारी ॥
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना | सरनागत बच्छल भगवाना ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 43

सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥43 ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू | आँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं | जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ॥
पापवंत कर सहज सुभाऊ | भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जौ पै दुष्टहृदय सोइ होई | मोरें सनमुख आव कि सोई ॥
निर्मल मन जन सो मोहि पावा | मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दससीसा | तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ॥
जग महुँ सखा निसाचर जेते | लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ॥
जौ सभित आवा सरनाई | रखिहउँ ताहि प्राण की नाई ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 44

उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि चले अंगद हनु समेत ॥44 ॥

सादर तेहि आगें करि बानर | चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
दूरिहि ते देखे द्वै भ्राता | नयनानंद दान के दाता ॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी | रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ॥
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन | स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥
सिंघ कंध आयत उर सोहा | आनन अमित मदन मन मोहा ॥
नयन नीर पुलकित अति गाता | मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥
नाथ दसानन कर मैं भ्राता | निसिचर बंस जनम सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा | जथा उलूकहि तम पर नेहा ॥

दोहा - 45

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ॥45 ॥

अस कहि करत दंडवत देखा | तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा | भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ॥
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी | बोले बचन भगत भयहारी ॥
कहु लंकेस सहित परिवारा | कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ॥
खल मंडलीं बसहु दिनु राती | सखा धरम निबहइ केहि भाँती ॥
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती | अति नय निपुन न भाव अनीती ॥
बरु भल बास नरक कर ताता | दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ॥
अब पद देखि कुसल रघुराया | जौ तुम्ह कीन्ह जानि जन दाया ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics

दोहा - 46

तब लागि कुसल न जीव कहूँ सपनेहूँ मन बिश्राम।
जब लागि भजत न राम कहूँ सोक धाम तजि काम ॥46 ॥

तब लागि हृदयँ बसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥
जब लागि उर न बसत रघुनाथा । धरें चाप सायक कटि भाथा ॥
ममता तरुन तमी अँधिआरी । राग द्वेष उलूक सुखकारी ॥
तब लागि बसति जीव मन माहीं । जब लागि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ॥
अब मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला ॥
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ॥

दोहा -47

अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरचि सिब सेव्य जुगल पद कंज ॥47 ॥

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ । जान भुसुंङि संभु गिरिजाऊ ॥
जौं नर होइ चराचर द्रोही । आवे सभय सरन तकि मोही ॥
तजि मद मोह कपट छल नाना । करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥
जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥
सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥
समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 48

सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्राण समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥48 ॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
राम बचन सुनि बानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 49

रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेहु राजु अखंड ॥49(क) ॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हे दिऐँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्ह रघुनाथ ॥49(ख) ॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना । ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा । प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥
पुनि सर्वग्य सर्व उर बासी । सर्वरूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक । कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झष जाती । अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥
कह लंकेस सुनहु रघुनायक । कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥
जद्यपि तदपि नीति असि गाई । बिनय करिअ सागर सन जाई ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा – 50

प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ॥50 ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई । करिअ दैव जौ होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमन मन भावा । राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा । सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ॥
कादर मन कहूँ एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा । ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ॥
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ॥
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा – 51

सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ॥51 ॥

प्रगत बखानहिं राम सुभाऊ । अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर । अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए । बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे । दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना । तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसि तुरत छोडाए ॥
रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

दोहा – 52

कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।
सीता देइ मिलेहु न त आवा काल तुम्हार ॥52 ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा | चले द्रुत बरनत गुन गाथा ॥
 कहत राम जसु लंकाँ आए | रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥
 बिहसि दसानन पूँछी बाता | कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
 पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी | जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
 करत राज लंका सठ त्यागी | होइहि जब कर कीट अभागी ॥
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई | कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
 जिन्ह के जीवन कर रखवारा | भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ॥
 कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी | जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
 दोहा -53

की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
 कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥53 ॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें | मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ॥
 मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा | जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥
 रावन द्रुत हमहि सुनि काना | कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
 श्रवन नासिका काटै लागे | राम सपथ दीन्हे हम त्यागे ॥
 पूँछिहु नाथ राम कटकाई | बदन कोटि सत बरनि न जाई ॥
 नाना बरन भालु कपि धारी | बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
 जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा | सकल कपिन्ह महुँ तेहि बलु थोरा ॥
 अमित नाम भट कठिन कराला | अमित नाग बल बिपुल बिसाला ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
 दोहा - 54

द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि।
 दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥54 ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना | इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥
 राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं | तृन समान त्रेलोकहि गनहीं ॥
 अस मै सुना श्रवन दसकंधर | पदुम अठारह जूथप बंदर ॥
 नाथ कटक महुँ सो कपि नाही | जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ॥
 परम क्रोध मीजहिं सब हाथा | आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
 सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला | पूरहीं न त भरि कुधर बिसाला ॥
 मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा | ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ॥
 गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका | मानहु प्रसन चहत हहिं लंका ॥

दोहा -55

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम।
 रावन काल कोटि कहु जीति सकहिं संग्राम ॥55 ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई | सेष सहस सत सकहिं न गाई ॥
 सक सर एक सोषि सत सागर | तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर ॥
 तासु बचन सुनि सागर पाहीं | मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥

सुनत बचन बिहसा दससीसा | जौं असि मति सहाय कृत कीसा ॥
सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई | सागर सन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई | रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥
सचिव सभित बिभीषन जाके | बिजय बिभूति कहाँ जग ताके ॥
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी | समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामानुज दीन्ही यह पाती | नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन | सचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा -56

बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस ॥56(क) ॥
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥56(ख) ॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई | कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा | लघु तापस कर बाग बिलासा ॥
कह सुक नाथ सत्य सब बानी | समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा | नाथ राम सन तजहु बिरोधा ॥
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ | जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही | उर अपराध न एकउ धरिही ॥
जनकसुता रघुनाथहि दीजे | एतना कहा मोर प्रभु कीजे।
जब तेहिं कहा देन बैदेही | चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ | कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
करि प्रनामु निज कथा सुनाई | राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥
रिषि अगस्ति कीं साप भवानी | राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
बंदि राम पद बारहिं बारा | मुनि निज आश्रम कहूँ पगु धारा ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 57

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥57 ॥

लछिमन बान सरासन आनू | सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ॥
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती | सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥
ममता रत सन ग्यान कहानी | अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा | ऊसर बीज बाँ फल जथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा | यह मत लछिमन के मन भावा ॥
संघानेउ प्रभु बिसिख कराला | उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
मकर उरग झष गन अकुलाने | जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
कनक थार भरि मनि गन नाना | बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा - 58

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच।

बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ॥58 ॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥
गगन समीर अनल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ॥
तव प्रेरित मायाँ उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई । सो तेहि भाँति रहे सुख लहई ॥
प्रभु भल कीन्ही मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई । उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई ॥
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई । करौं सो बेगि जौ तुम्हहि सोहाई ॥

दोहा – 59

सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटक तात सो कहहु उपाइ ॥59 ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाई रिषि आसिष पाई ॥
तिन्ह के परस किँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उर धरि प्रभुताई । करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ । जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥
एहि सर मम उत्तर तट बासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥
देखि राम बल पौरुष भारी । हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पयोधि सिधावा ॥

छंद -निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ॥
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ॥

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
दोहा – 60

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥60 ॥

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ लिरिक्स, Sunderkand Path Lyrics
(इति सुन्दरकाण्ड समाप्त)